प्रकृति की गोद

- डोली शाह

अंग्रेजी लिवास, गोरा बदन, पतली कमर,बड़े-बड़े स्तन, वो गुलाबी गाल, आंखों पर काला चश्मा, हाथों में बड़ा- सा मोबाइल देखते ही शहरों की चकाचौंध का एहसास दिलाता।

बचपन से ही माता-पिता की लाडली सोनू की एक इच्छा पर सब कुछ उपलब्ध हो जाता। चाहे वह एक पौधे की बात कहें या खाने पीने तथा उसकी जरूरत की वस्तुएं...। लेकिन हां, वह बचपन से ही प्रकृति प्रेमी रही,अपना छोड़ दूसरों की कद्र करना उसके शरीर में रक्त की तरह दौड़ता था। एक छोटे से पौधे के पास भी वह खड़ी हो जाती तो घंटो सवालों में उलझी रहती। पके पत्तों से लेकर गमले तक को भी इस कदर चमका कर रखती मानो सेज सजा रही हो।

अचानक सोनू की नानी लीला देवी की मां की कुछ तबीयत बिगड़ने की सूचना मिली। सोनू का ग्रीष्मावकाश देख दोनों वहां चल दिए। चारों ओर से बांस की झाड़ियां के बीच छुक -छुक करती रेलगाड़ि, इक्का दुक्का बांस फूस की झोपड़ियां, ऊंची ऊंची पर्वतों की चोटियां, वह बड़े-बड़े तालाब पूरे रास्ते का नजारा देखते ही बन रहा था। सोनू पूरी तरह उसी में रम गई थी।

घर पहुंच कर नानी की परी सोनू हर चीज का लुफ्त उठाती। वह प्रकृति के सवालों में उलझ कर रह जाती। हर किसी के साथ उसका अपनेपन का व्यवहार बड़ा ही सुखद अनुभव देता।

अगले दिन सोनू प्रातः भ्रमण हेतु प्रकृति का आनंद उठाने निकली। लंबी-लंबी झाड़ियां के बीच बिल्कुल सन्नाटा, कोहरे की वह धूंध, दूर-दूर तक लाइलहाते धान के खेत, पहरा देता वह पुतला तो आंख मिचौली खेलता आग का गोला, पूरी प्रकृति मानो अपने आप से हंसी ठहाके कर रही हो। उसमें पक्षियों का कलरव क्या अद्भुत दृश्य बनता है। इतने में सोनू की नजर दूर खड़ी तालाब के किनारे एक युवा पर पड़ी। समीप आने वह पल भर यूं ही निहारती रही, फिर बोली आप यहां खड़े होकर इस बांस के सहारे क्या कर रहे हैं।

दो पर युवक मौन रहा। सोनू निहारती रही। इतने में धागे के सहारे एक मछली उड़ कर निकली। सोनू अवाक हो बोली-- वाह मछली!

"हां मछली,कभी देखा नहीं क्या !"

"देखा है मंडियों में!"

"अच्छा" कहां रहती हो, इससे पहले कभी देखा नहीं तुम्हें?"

"हां, यहां मेरा नाम सोनू है,मैं कल ही मामा के घर आई हूं,"

"कहां रहती हो, कौन है तुम्हारे मामा?"

"शिवमंगल शर्मा नाम है उनका,"

"अच्छा !"

"आपका नाम ?"

"सूरज "

"वाह उगता हुआ सूरज, लेकिन आप इतनी सुबह-सुबह मछलियां क्यों पकड़ रहे हैं ?"

सूरज मौन रहा। "आपको ठंड नहीं लग रही,आपने तो गर्म कपड़े भी नहीं पहने!"

"नहीं, वो सुबह से काम के चक्कर में यूं ही निकल आया।"

इतने में एक और मछली देख वह...." "आप कैसे पकड़ते हैं, मुझे भी सिखा दीजिए।"

सूरज दंग हो कर बोला- "अच्छा फिर कभी!"

इतना सुन सोनू भी चल पड़ी। घर आकर वह मां से प्रकृति की सुंदरता की तारीफ करते ना थकी।

अगली सुबह वह बड़े चाव से प्रातः भ्रमण के लिए पुन: निकली। चलते-चलते उसकी नजर सूरज पर पड़ते ही खुशी से फूले न सुनाई। वह जोश भरे शब्दों में बोली -"गुड मॉर्निंग।"

"वेरी गुड मॉर्निंग"

"कब आए आप"

"जस्ट अभी-अभी ही आया हूं।"

"अच्छा! आज तो मुझे सिखा ही दीजिए।" "ओके तुम डोर के अंतिम सिरे पर नज़रें लगा कर रखना।"

"जी-जी," सोनू भी देखती रही। इतने में उसने पूछा --आप "हर रोज मछली पकड़ने आते हैं ?"

"हां, वो दरअसल मेरी मां को ब्लड कैंसर है, डॉक्टर ने उन्हें सिर्फ यही मछली उबाल करके खाने को बोला है।"

"अच्छा,घर पर और कौन-कौन है आपके"

"कोई नहीं,सिर्फ इकलौता बास हूं मैं, पिता रहे नहीं, सारी जिम्मेदारी सिर्फ मेरी ही है।"

"फिर तो सारा काम आप ही को करना पड़ता होगा।"

"हां घर की परिस्थितियों देख मैं दफ्तर से हाजिरी लगाकर ही आ जाता हूं,बाकी सारे काम घर से ही निपटाता हूं।" धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे से इधर-उधर की बातें करते रहे। जिससे सोनू अब हर दिन

प्रात भ्रमण करने के बहाने ही घंटों सूरज के साथ समय बिताने लगी। दोनों में अपनत्व का एक रिश्ता सा पनपने लगा।

इतने में एक दिन सोनू ने सूरज की मां को देखने की इच्छा जाहिर की।सूरज सुनकर अवाक रह गया लेकिन फिर वह उसे अपने साथ ले गया।

मां से मिलने वाले आशीर्वचनों ने दोनों को आबाद कर दिया। सोनू के कानों में उनकी बातें कुछ इस तरह गूंज रही थी कि दोनों के बीच कुछ ना होते हुए भी होने का एहसास दिला रहा था। जैसे रिश्तो में मधुरता ही डाल गई।

सूरज कुछ बोलने को ही था, कि मां बोली- "कुछ मत बोलो! मेरे बाल ऐसे ही नहीं सफेद हुए।" सोनू ने इशारे से सूरज को समझाया-" मां की खुशी यदि इन कल्पनाओं में ही है तो उन्हें कष्ट मत दीजिए। हर मां की पल-पल की खुशी बच्चों के लिए बहुत मायने रखती है।" यह बात सूरज के मन - मस्तिष्क घर कर गई। इतनी कद्र इतनी परवाह ....वह मां से घंटों बैठ बातें करती रही और एक बिस्तर पर लेटे इंसान को प्यार के दो बोल बोलने वाला मिल जाए तो इससे बड़ी खुशकिस्मती क्या हो सकती है। दोनों के हंसी ठहाके देख सूरज भी कल्पनाओं की दुनिया में गोते लगाने लगा। इतने में जलपान कर सोनू घर से निकलने ही लगी थी कि सूरज ने आभार व्यक्त करते हुए कहा," मां की बातों का बुरा मत मानिएगा वह दिमाग से कुछ कमजोर हो गई है। कैंसर की वजह से उनकी स्मरण शक्ति भी बहुत कम हो गई है लेकिन हां अभी भी उनका आत्मविश्वास ही उनकी ताकत है, जो उन्हें हमेशा खुश रखता है।"

"हां, यदि मन खुश हो तो शारीरिक कष्ट इतने महसूस नहीं होते। मैं चली अब।"

अब सूरज की रातों की नींद उड़ने लगी। वह मन ही मन सोचता, काश मां की बातें सच हो जाए। उधर सोनू भी कल्पनाओं की दुनिया में मां के साथ बिताए पलों को अक्सर स्मरण करती।

करीब सप्ताह दस दिन बीत गए। सोनू हर दिन मछली पकड़ने देखने के बहाने घंटो सूरज से बातें करती। वक्त के साथ ही मछलियों का मारना कुछ ज्यादा ही जल्दी सुइयों का चलना लगने लगा। दोनों के बीच प्यार की परछाइयां कुछ ज्यादा ही बढ़ने लगी। दोनों अक्सर यादों में खोए रहते। लेकिन सोनू का अवकाश खत्म होते ही वह वापस चकाचौंध की दुनिया में आ गई।सोनू का हर पल सूरज की यादों की चादर ओढ़ अपने तक ही सिमटी रहना मां को बड़ा अटपटा सा लगता। वह मन ही मन उसका घर बसाने की सोचती लेकिन सोनू अपनी इच्छाओं पर अड़ी रही।वह इंतजार करती रही सही वक्त का.....।

तभी एक दिन सूरज की तबीयत कुछ बिगड़ी। हालात भी कुछ गंभीर हो गए। जांच करने पर सूरज के शरीर में भी कैंसर की कुछ अंश पाए गये। यह सुन कर सूरज बिल्कुल टूट सा गया। तन्हाइयों के आंगन में उसके सारे सपने बिखर कर रह गए।

उसकी अपनी जिंदगी भी बोझ लगने लगी। उसके सोने के बाद भी डॉक्टर की कही बातें उसके कानों में गूंजती। सूरज सोनू के फोन के पहले रिंग पर ही उत्तर देने वाला,वही अब लंबे इंतजार के बाद भी कुछ बोलने में जवान लड़खड़ाने लगी। सूरज का बदलता व्यवहार देख सोनू खुद को रोक न पाई और उसने सूरज के मन की गहराइयों में जाने की कोशिश की, लेकिन सूरज आंख मिचोली का चादर लिए कुछ भी बताने से इनकार करता रहा।

वक्त के साथ बातें करते हुए सोनू ने सूरज की सारी सच्चाई जान ली। यह सुनते ही वह एक तरफ जहां दुखी हुई वहीं उसकी बातें सुन अवाक रह गई। तभी सूरज कहने लगा कि "हमारे बीच लगाव जरूर था लेकिन वह इतना भी नहीं था कि रिश्ता विवाह तक पहुंच सके।"

"यह सुन सोनू खुद का रोक न सकी और उसने कड़क स्वर में कहा -"आज मेरी जिंदगी का अंतिम दिन है, यदि मैं तुम्हारी ना हो सकी तो मैं किसी की नहीं होना चाहूंगी।फैसला तुम्हारे हाथों में है।"

"यह सुन सूरज खुद को रोक न सका और समझाते हुए बोला -"सोनू ज़िद मत करो। मैं एक कैंसर का मरीज हूं। मैं किसी से शादी नहीं कर सकता।"

"क्या,किसने कहा तुम्हें!"

"यही सच है, मैं इसके छोटे-छोटे लक्षणों से वाकिफ हूं। मुझे एहसास हुआ तो जांच करने पर पता चला कि मुझे भी...."

सोनू खुद से लड़ती हुई बोली," तो क्या हमारा प्यार इतना हल्का है कि एक छोटी सी बीमारी उसे शून्य में बदल दे। "

"सोनू ! यह छोटी सी बीमारी नहीं है,न जाने हर वर्ष इससे कितनों की ही जान जाती है। मेरी मां को ही देखो।" "सूरज मैं समझ सकती हूं तुम्हारी हालत... तुम अपनी तुलना मां से क्यों कर रहे हो! मां की उम्र हो चुकी है,उनके शरीर जर्जर हो चुके है। तुम्हारा तो अभी प्राइमरी स्टेज है तुम पूरी तरह ठीक हो जाओगे और हम 21वीं सदी में जी रहे हैं,यहां सब कुछ संभव है। मैं बड़े से बड़े डॉक्टर से तुम्हारी जांच करआऊंगी। तुम उसकी टेंशन मत लो।भूल जाओ तुम्हें कुछ हुआ भी है।अब सब कुछ मेरी जिम्मेदारी !पर मुझे अपने आप से अलग करने की सोचना भी मत! मैं सिर्फ तुम्हारी हूं।" यह कहते हुए उसने अपने दर्द को समिति कर फोन रख दिया।

सोनू ने यह बात अपने पिता से साझा की और एक अच्छे डॉक्टर से जांच करवाई, जिससे पता चला कि लंबे वक्त तक दवाइयां के सेवन से वह बिल्कुल ठीक हो जाएगा।यह सुन सोनू की खुशी का ठिकाना ना रहा। वहीं सूरज को भी आशा की किरण दिखाइ दी। अगले ही दिन सूरज अपनी मां को लेकर वहां पहुंचा। लेकिन काफी लंबे समय से बीमार होने के कारण दवाइयां के बाद भी पूरा ठीक होने की कोई गारंटी नहीं मिली।लेकिन हां सूरज की यह बातें सुन मां को एक तरफ भयानक बीमारी से लड़ने की शक्ति मिली।अब दोनों के रिश्ते कुतुब मीनार की ऊंचाइयां छू रहे थे, पर सूरज अक्सर

बात को टाल देता। देखते ही देखते सूरज की जांच बिल्कुल नार्मल हो गई। जिससे दोनों के बीच सम्मानजनक रिश्ते की डोर और भी मजबूत हो गई। एक तरफ जहां सोनू के माता-पिता को एक असहाय की मदद करने का सुख मिला, वही सूरज की मां को अपनी पहाड़ जैसी बीमारी भी बालू के कण जैसे लगने लगी।

परिस्थिति को देख सोनू ने पिता से सूरज के साथ विवाह के इच्छा जाहिर की। माता-पिता के लंबे वक्त से चल रहे अंदेशे को सोनू ने सही कर दिखाया, लेकिन इकलौती बेटी की खुशी देख वह विवाह के लिए राजी हो गए और सूरज की मां का बोला हुआ आशीर्वचन पुरोहित के सामने पूरा हो गया। दोनों का विवाह बड़े हीसाधारण एवं सम्मानजनक ढंग से संपन्न हो गया। प्रकृति की गोद में हिलोरें लगाते दोनों के रिश्ते गुलाब की तरह महकते रहे और सब कुछ देख मां की आयु और लंबी होती गई जिससे छोटा सा परिवार सदा खुश रहने लगा।

डोली शाह

निकट -पी एच ई, पोस्ट- सुल्तानी छोरा, जिला- हैलाकांदी, असम-788162

मोबाइल-9395726158, ईमेल- shahdolly777@gmail.com